डॉ. ऋतु शर्मा नंनन पांडे

ज़िम्मेदारी

आज दफ़्तर से लोटने में देर हो गई । सर्दी बढ़ हैं, अरे इन बच्चों को देखो इन्हें रात में अकेले घुमने से बिल्कुल डर नहीं लगता। बस से उतरकर घर को जाने वाले रास्ते पर दो छोटे बच्चों तक़रीबन आठ नो साल के रहे होंगे । मैंने बच्चों से पूछा " अरे बच्चों रात को कहा ठंड में घुम रहे हो ?" बच्चों ने सहम कर पीछे मुड़कर मुझे देखा । कुछ नहीं बस थोड़ा कबाड़ा बीन रहे हैं। पर कबाड़ा क्यों बीन रहे हो? पैसे चाहिए, पैसे किस लिए? माँ तीन दिन से काम पर नहीं गई है । माँ काम पर नहीं गई,पर तुम्हारे पापा तो होंगे,वह कहाँ है। वह माँ और हम तीनों भाई बहन को छोड़कर भाग गये, पर तुमने बताया नहीं,पैसे क्यों चाहिए? माँ बिमार है । दवाई लानी है ,और खाना भी छोटा सा बच्चे ने अपनी बहन के पीछे छिपते हुए कहा । "अरे ये सब इन लोगों के रोज़ के बहाने हैं पैसे माँगने के ,साथ से गुजरते हुए एक आदमी की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी। अच्छा कहाँ है तुम्हारी माँ? वहाँ पार्क मे चलो पहले तुम्हारी माँ के पास चलते हैं पार्क में एक औरत एक छोटे बच्चे के साथ बैंच के पीछे डरी सहमी सी बैठी थी उसका पूरा शरीर घावों से भरा हुआ था ।मैंने पूछा तुम इतनी ठंड में बच्चों को लेकर यहाँ क्यों बैठी हो । तुम्हारा घर नहीं है ? घर तो था, पर मेरी बीमारी के कारण घर वालों ने मुझे घर से निकाल दिया।मेरे पास कोई दूसरा ठिकाना नहीं है ,इसलिए बच्चों को लेकर दस दिन से यहीं रहती हूँ ।बच्चों की स्कूल फ़ीस नहीं भर सकती ,इसलिए बच्चे स्कूल पढ़ने नहीं जा सकते ।यहाँ दिन में कूड़ा बीनकर मेरी दवाई और अपने खाने का इंतज़ाम कर रहें है। मैं मन में सोचती ही रह गई , ज़िम्मेदारी बचपन को कितनी जल्दी निगल जाती है।

त्रिशंकु

शर्मा जी का लड़का कई साल बाद विदेश से चार हफ़्तों के लिए भारत आ रहा था । घर में बेटियों और उनके बच्चों व अन्य रिश्तेदारों के आने से पूरे घर में चहल- पहल मची हुई थी । वैसे तो शर्मा जी का बेटा जब अठारह साल का था तभी से बाहर ही रहता था, पर तब वह पढ़ाई के लिए वहाँ गया था । बाद में उसकी नौकरी अमेरिका की एक अच्छी कंपनी में लग गई थी ,तब से वह वही रहता था । इस बार वह अपने अमेरिकी बीवी और दस साल के बेटे के साथ आ रहा था। अब तक परिवार का कोई सदस्य उसकी बीवी व बच्चे से साक्षात रूप में नहीं मिला था।यह पहला अवसर था ,

बेटा घर आ गया शाम को घर में पार्टी रखी गई । शर्मा जी का पोता दूसरे बच्चों के साथ जल्दी घुल मिल गया बस हिन्दी साफ़ नहीं बोल पा रहा था। घर के बच्चे उसे अपने दोस्तों से मिलवा रहे थे"। यह हमारा बाहर वाला ममेरा भाई है, इसे हिन्दी नही आती यह भारतीय नहीं एन आर आई है । कुछ ही देर में बच्चा शर्मा जी के बेटे के पास पहुँचा और बोला " पापा आप अमेरिका में हमेशा मुझे कहते हो मुझे भारतीय संस्कृति और भाषा सीखनी चाहिए । अमेरिकन लोग भी मेरा अमेरिका में जन्म होने के बाद भी और हमारी अमेरिकी नागरिकता होने पर भी हमें भारतीय ही मानते है ,अमेरिकन, नही ,फिर यहाँ भारत में यह लोग मुझे भारतीय न कह कर बाहर वाला या एन आर आई क्यों बुला रहें हैं?"बेटे के मुँह से यह बात सुन शर्मा जी का बेटा सोचने को मजबूर हो गया ,सच ही तो कह रहा है बेटा आख़िर हमारी पहचान क्या है? क्या सच में हम त्रिशंकु है ?

ISSN:2583-8849